मिमी के लिए
क्या लूँ?
पढ़ना है समझना

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – कृतिका एस. नरूला

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-891-1

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों की रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार

मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य व्यापार प्रबंधक : गौतम गांगुली

मिमी के लिए क्या लूँ?

माधव के पास एक बकरी थी।
उस बकरी का नाम मिमी था।
माधव मिमी को बहुत प्यार करता था।
मिमी भी माधव के आस-पास ही घूमती रहती थी।

मिमी का रंग सफ़ेद और भूरा था।
उसके कान बड़े-बड़े थे।
मिमी के बाल बहुत चमकते थे।
मिमी की आँखें बड़ी प्यारी थीं।

मिमी बहुत मुलायम थी।
माधव दिनभर उसे सहलाता रहता था।
वह उसे अपनी गोद में लिए फिरता था।
माधव को मिमी के मुलायम-मुलायम कान बहुत पसंद थे।

मिमी पूरे एक साल की हो गई थी।
मिमी का जन्मदिन आया।
माधव उसका जन्मदिन मनाना चाहता था।
वह मिमी के लिए एक तोहफ़ा खरीदना चाहता था।

माधव ने मम्मी से तोहफ़े के लिए पैसे माँगे।
मम्मी ने बीस रुपये दे दिए।
माधव ने मिमी को नहला-धुलाकर तैयार किया।
वह मिमी को लेकर बाज़ार की तरफ़ निकल पड़ा।

माधव ने मिमी की रस्सी पकड़ रखी थी।
थोड़ी देर बाद माधव ने रस्सी खोल दी।
मिमी फ़ौरन इधर-उधर उछलने लगी।
माधव को मिमी का उछलना-कूदना बहुत पसंद था।

बाज़ार में सबसे पहली दुकान हलवाई की थी।
दुकान में खूब सारी मिठाइयाँ थीं।
हलवाई के पास खूब सारे लड्डू और रसगुल्ले थे।
उसके पास बहुत सारा दूध, दही और शरबत भी था।
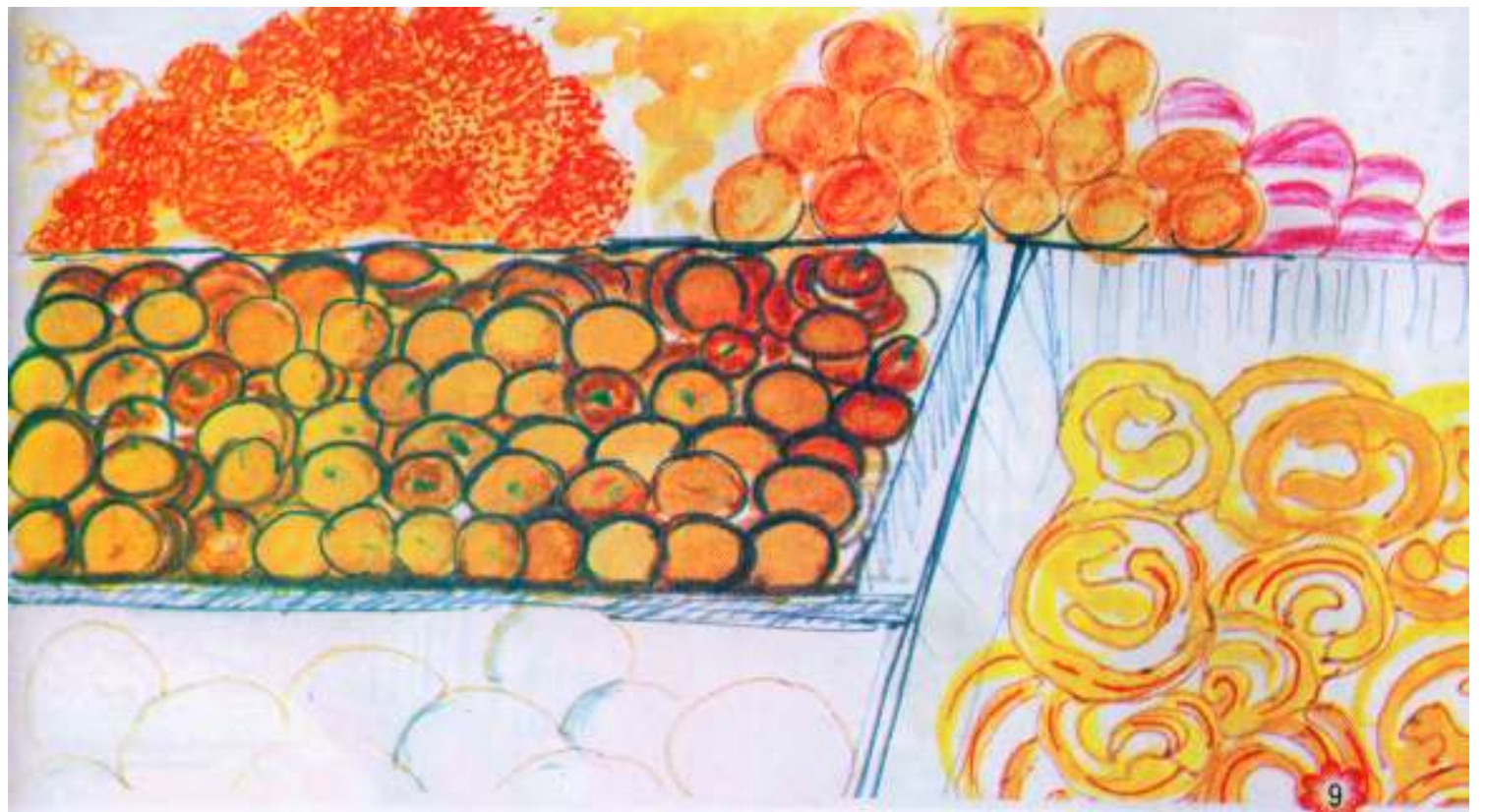
तभी माधव की नज़र दूसरी तरफ़ की मिठाइयों पर पड़ी।
वहाँ रसगुल्ले, जलेबी और पेड़े रखे हुए थे।
माधव सोचने लगा कि मिमी के लिए क्या ले।
एक दोना जलेबी कैसी रहेगी?

अगली दुकान कपड़ों की थी।
दुकान पर बहुत सारे लोग कपड़े खरीद रहे थे।
वहाँ कमीज़ें, कुर्ते और पाजामे लटके हुए थे।
कुछ कपड़े शीशे की अलमारियों में रखे हुए थे।

माधव कमीज़ों की तरफ़ देखने लगा।
उसने पीली, नीली, हरी और गुलाबी कमीज़ें देखीं।
माधव सोचने लगा कि वह मिमी के लिए क्या ले।
लाल छींट वाली कॉलर की कमीज़ कैसी रहेगी?

अगली दुकान बर्तनों की थी।
दुकान पर खूब सारे बर्तन थे।
वहाँ बहुत सारे बर्तन स्टील के थे।
कुछ बर्तन पीतल के भी थे।

माधव सारे बर्तनों को देखने लगा।
वहाँ थालियाँ, कटोरियाँ, चम्मचें और गिलास रखे हुए थे।
माधव सोचने लगा कि वह मिमी के लिए क्या ले।
दूध के लिए एक कटोरा कैसा रहेगा?

अगली दुकान लुहार की थी।
उसकी दुकान पर तरह-तरह की चीज़ें थीं।
वहाँ तवे, कड़छी, जंज़ीरें और खूब सारी कीलें थीं।
लुहार गर्म-गर्म भट्टी पर कुछ बना रहा था।

माधव ने चारों तरफ़ नज़र घुमाई।
माधव सोचने लगा कि वह मिमी के लिए क्या ले।
उसकी नज़र घुँघरुओं पर पड़ी।
माधव ने मिमी के लिए घुँघरू ले लिए।

माधव ने मिमी के दोनों पैरों में घुँघरू पहना दिए। घुँघरू लाल रंग के सुंदर से धागे में बँधे हुए थे। मिमी कूदती-फाँदती माधव के साथ चल दी। सब लोग उसके घुँघरुओं की छुन-छुन सुनने लगे।
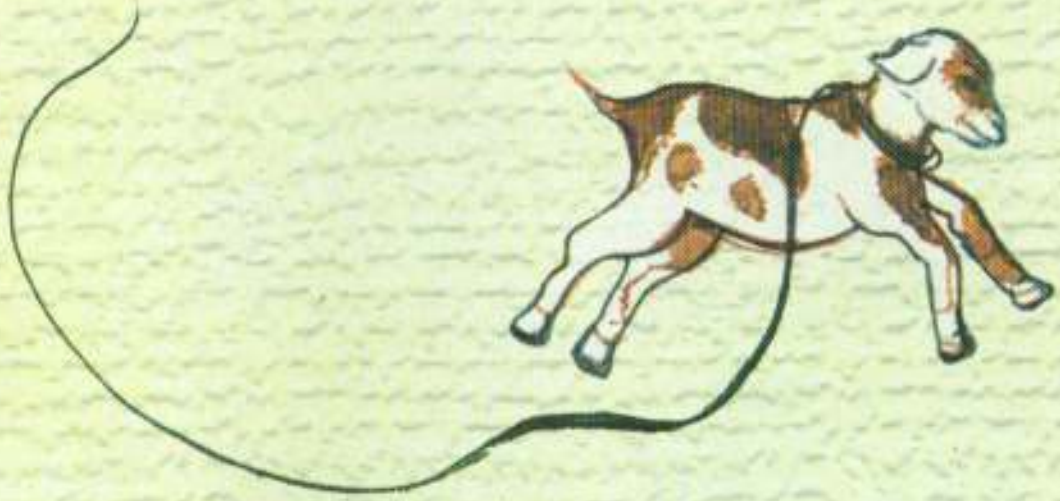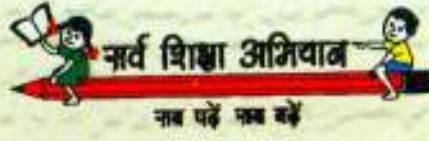
स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
2090
रु 10.00
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING